Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 2281–2284

ANALYTICAL STUDY OF EDUCATIONAL ADJUSTMENT OF NORMAL AND DISABLED STUDENTS

सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का विष्लेषणात्मक अध्ययन

Umra Idris [1], Rajkumari Gola[2]

[1] Research Student, Department of Education, IFTM University, Moradabad, India
[2] Assistant Professor, Department of Education, IFTM University, Moradabad, India

Corresponding Author
Umra Idris, iumra454@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.5332

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: It has been found in various studies that adjustment of normal and disabled students has a new effect on the group of students. If the adjustment is good in both the students, then the interest in education increases in both types of normal and disabled students and they are able to get good education by making adjustment among themselves. Similarly, in the field of education, there is a good adjustment among the group of normal and disabled students, due to which they get various opportunities to progress in their education. Normal and disabled students are also able to increase their aspirations by adjusting among themselves. And by joining each other's group, they develop their complete development. Educational adjustment not only helps in the field of education, it also helps normal and disabled students in the field of overall development of the student such as physical development, mental development and emotional development. Similarly, normal and disabled students remain motivated to learn new things.

Hindi: विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है कि सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन से विद्यार्थियों के समूह पर नवीन प्रभाव पड़ता है। यदि समायोजन दोनों विद्यार्थियों में अच्छा होगा तो दोनों प्रकार सामान्य एवं विकलांग के विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ती है और आपस में समायोजन बनाकर अच्छी शिक्षा हासिल कर पाते हैं। इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के समूह में आपस में अच्छा समायोजन बैठ पाता है जिससे उन्हें उनकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति हासिल करने के विभिन्न अवसर प्राप्त होते हैं। सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थी आपस में समायोजन कर अपनी आकांक्षाओं को भी बढ़ा पाते हैं। और एक दूसरे के समूह में मिलकर अपना संपूर्ण विकास करते हैं। शैक्षिक समायोजन केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं वह विद्यार्थी के संपूर्ण विकास जैसे शारीरिक विकास मानसिक विकास व संवेगात्मक विकास जैसे विकास क्षेत्र में सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करती है इसी प्रकार सामान्य व विकलांग विद्यार्थी नवीन विशेषताओं को सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं।

Keywords: Educational Adjustment, Mental, Emotional Development, Normal and Disabled Students शैक्षिक समायोजन, मानसिक, संवेगात्मक विकास, सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थी

1. प्रस्तावना

इन दिनों देखा जा सकता हैं कि हमारे समाज के लिए हर एक व्यक्ति एवं प्रत्येक सामाजिक प्राणी का पूर्ण रूप से शिक्षित होना अनिवार्य है। यदि हम समाज की प्रगति की बात करें और इस समाज के अंतर्गत आ रहे विभिन्न क्षेत्रों की बात करें, तब इस बात को समझना बहुत ही अनिवार्य है, कि शिक्षा का क्या अर्थ है, तथा शिक्षा के क्या उद्देश्य हैं और शिक्षा की क्या अनिवार्यता है? शिक्षा हमारे समाज में रह रहे प्रत्येक व्यक्ति के लिए अति आवश्यक है। समाज में रह रहा व्यक्ति चाहे वह बच्चा हो, युवा हो, वृद्ध हो, सभी के लिए शिक्षा ग्रहण करना जरूरी है। हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा को ग्रहण करने के लिए कोई उम्र बांधा नहीं आती। व्यक्ति चाहे जिस अवस्था में हो वह शिक्षा को अपनी रूचि के अनुसार ग्रहण कर सकता है। दूसरी और हम यह जानते भी हैं और देखते भी हैं कि समाज में रह रहा प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह बच्चा हो, युवा हो, वृद्ध हो, यह सब एक दूसरे से किसी न

किसी प्रकार से विभिनता दर्शाते हैं। एक व्यक्ति का किसी दूसरे व्यक्ति से रंग-रूप, बुद्धि, शारीरिक बनावट, व्यवहार, रुचि आदि में विभिन्नता होने को हम व्यक्तिक विभिन्नता का नाम दे सकते हैं। व्यक्तित्व विभिनता एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से सिर्फ रंग रूप में ही नहीं अलग करती, अपितु एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से व्यवहार अभिरुचि में भी अलग बनाती है। समाज में रह रहा प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से किसी ना किसी प्रकार से भिन्न है, यह विभिनता अलग-अलग प्रकार की भी हो सकती है। यदि व्यक्तित्व भिन्नता की बात की जाए तो हम देखते हैं, कि विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में अनेकों प्रकार की विभिनता को देखा जा सकता है। विद्यार्थियों में यह विभिनता शारीरिक भी हो सकती है, तथा व्यवहारिक भी हो सकती है। यदि इस व्यक्तित्व भिन्नता पर गहराई से नजर डालें तो विद्यार्थियों में आपस में विभिन्नता के दो समूह मूल रूप से दिखाई देंगे। पहला समूह सामान्य विद्यार्थियों का होगा तथा दूसरा समूह विकलांग विद्यार्थियों का होगा। सामान्य विद्यार्थी तथा विकलांग विद्यार्थी आपस में बहुत अधिक विभिनता रखते हैं, तथा सामान्य विद्यार्थियों व विकलांग विद्यार्थियों में जो विभिन्नता देखने को मिलती हैं वे शारीरिक भी हो सकती है, व मानसिक भी हो सकती है इसी प्रकार देखा जाता हैं कि प्रत्येक विद्यालय में कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सम्मान एवं विकलांग विद्यार्थी दोनों साथ में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

सामान्य तथा विकलांग विद्यार्थियों को इस प्रकार की व्यक्तित्व भिन्नता के कारण आपस में समायोजन, आकांक्षा स्तर व उनकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को बनाए रखने व उसको सुचारु रुप से चलाना का एक बड़ा लक्ष्य हो सकता हैं। इसी प्रकार सामान्य एवं विकलांग दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के इस समूह को आपस में मिलाकर हम इन दोनों विद्यार्थियों के समूह को शिक्षा ग्रहण कर आएं तो हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि दोनों समूह सामान्य एवं विकलांग आपस में समायोजन स्तर व उनके अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि की स्तर में बहुत ही अधिक अंतर देखने को मिलेगा। यदि हम देखेंगे तो यह सूचना ग्रहण कर पाएंगे कि सामान्य विद्यार्थी व विकलांग विद्यार्थी आपस में समायोजन करने में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं है। यदि हम देखेंगे तो यह सूचना ग्रहण कर पाएंगे कि सामान्य विद्यार्थी व विकलांग विद्यार्थी आपस में समायोजन करने में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं है। यदि हम देखेंगे तो यह इस निष्कर्ष पर पहुंच पाएंगे कि विकलांग विद्यार्थियों को हमारे समाज में हीनता की भावना से देखा जाता है। उनके लिए ऐसे भी विचार सामान्य विद्यार्थियों के मन में चलते होंगे कि यह किसी ना किसी तरीके से अपूर्ण है। सामान्य विद्यार्थियों के मन में ऐसे नकारात्मक विचार चलते हैं कि विकलांग विद्यार्थी किसी भी कार्य को पूर्ण रूप से करने में सक्षम होते हैं। सामान्य विद्यार्थियों की किसी नकारात्मक सोच के कारण विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन व आकांक्षा स्तर पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता होगा।

किसी मनुष्य को कोई भी चीज सीखनी वह किसी भी विषय में ज्ञान प्राप्त करना होता है तो वह किताबी ज्ञान तक अपने आप को केंद्रित न करके अपने आसपास के वातावरण व लोगों से सीखे जिससे उनके सीखने में रुचि भी उत्पन्न होती है और साथ ही साथ किसी भी विषय को सीखने के लिए उसे आसानी हो जाती है। इसी प्रकार जब सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों की शिक्षा की बात होती है यह प्रत्येक समूह अपने आप में विशेष प्रकार की विशेषताएं रखते हैं जो की शिक्षा को ग्रहण करने मैं अच्छा योगदान देती है। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई भी मनुष्य अपने आप को वातावरण के अनुसार समायोजित करने में अपने आप को सक्षम बनाता है। समायोजन करके कोई भी विद्यार्थी या कोई भी विद्यार्थियों का समूह अपने आप को नवीन विशेषताओं को अपने अंदर ग्रह करने व सिखाने के लिए तैयार करता है और वह उसी प्रकार अनुकूल परिस्थितियों में अपने आप को समायोजित करता है। इसी समायोजन को हम सामान्य व विकलांग विद्यार्थियों के समूह के अंतर्गत उनके शैक्षिक समायोजन पर ध्यान देते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थी चाहे वह विकलांग हो या सामान्य दोनों आपस में समायोजित होकर शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए सक्षम है और साथ ही साथ दोनों वर्गों के समूह आपस में मिलकर अपनी-अपनी विशेषताओं व ज्ञान एक दूसरे को स्थानांतरण भी करते हैं जिससे सामान्य विद्यार्थियों को विकलांग विद्यार्थियों से व विकलांग विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों से कुछ न कुछ नया सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व बहुत ही महत्वपूर्ण है यदि कोई भी विद्यार्थी अपने जीवन में सामाजिकता सीखने के लिए सबसे पहले अपने विद्यालय में प्रवेश लेता है और विद्यालय ही एक ऐसा क्षेत्र माना जाता है जहां कोई भी विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ मिलकर सामाजिकता को अच्छे से सीख पाता है। यदि सामान्य और विकलांग विद्यार्थी आपस में अच्छे से समायोजित होकर शिक्षा हासिल करते हैं तो वह खुद को इस नकारात्मक मानसिकता से दूर कर सकते हैं और शिक्षा के क्षेत्र में खुद की बहुत उन्नति कर सकते हैं शैक्षिक समायोजन से दोनों प्रकार के विद्यार्थी एक दूसरे से नए-नए विषय के बारे में पढ़ने व सीखने के अवसर एक दूसरे को प्रदान करते हैं और एक दूसरे से अच्छे से समायोजित होकर शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति के मार्ग खोजते हैं जिससे यह निश्चित हो जाता है कि कोई भी विद्यार्थी आपस में समायोजित या समायोजन करके उन्नति के मार्ग को चुन सकता है जो कि अकेले वह किसी समूह में नहीं कर सकता इसी प्रकार शैक्षिक समायोजन किसी भी विद्यार्थी को उसके शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जिससे वह एक दूसरे से नई-नई विषयों के बारे में जान पाएंगे और उन्हें आगे बढ़ाने के अवसर भी प्रदान कर पाएंगे। सामान्य बालक को का विकलांग बालकों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण होने के कारण विकलांग बालकों में अपने प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण बनता जा रहा है। इसी कारण उनका शैक्षिक स्तर निम्न होता जा रहा है। इस शोध समस्या का प्रमुख महत्व हम समझे तो हम यह ज्ञात कर पाएंगे विकलांग विद्यार्थियों में भी बहुत से धनात्मक गुण विद्यमान होते हैं, इन धनात्मक गुणों को सामान्य विद्यार्थियों को समझने की आवश्यकता है जिसके बाद सामान्य विद्यार्थियों तथा विकलांग विद्यार्थियों में समायोजनकरने की प्रक्रिया में सुधार आ पाएगा। विकलांग विद्यार्थियों के अंदर बहुत सारे रचनात्मक गुण विद्यमान होते हैं यदि वे इन गुणों को पहचान जाएं तो वह अपने भविष्य में बहुत अच्छे अच्छे बड़े-बड़े कार्य आसानी से कर सकते हैं और अपना भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं।

3. शोध अध्ययन के उद्देश्य

1) सामान्य एवं विकलांग छात्रों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करना।
2) सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करना।

3.1. शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1) सामान्य एवं विकलांग छात्रों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2) सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3.2. शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

4. शोध अध्ययन का सीमांकन

इस प्रस्तुत शोध अध्ययन में रामपुर जनपद के सरकार द्वारा सहायता प्राप्त एवं निजी मिडिल स्टेज के विद्यालयों में अध्यनरत कक्षा 8 के विकलांग तथा सामान्य विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

5. आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना परीक्षण-1 – "सामान्य एवं विकलांग छात्रों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' इस सम्बन्ध मे तालिका संख्या 1 प्रस्तुत हैं-

तालिका संख्या -1

परिगणित मूल्य	छात्रों के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	22.36	20.41
प्रमाप विचलन	7.95	7.15
विद्यार्थियों की संख्या	430	170
माध्य अन्तर	1.95	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	0.669	
टी-मूल्य	2.92	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता स्तर	0.05	
शून्य परिकल्पना	अस्वीकृत	

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी प्राप्तांकों का औसत 22.36 है जबकि विकलांग विद्यार्थियों का औसत 20.41 है दोनों का माध्य अन्तर 1.95 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 0.669 है। परिगणित टी- अनुपात 2.92 है, जो कि 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक है शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई है। निष्कर्षत कहा जा सकता है कि सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर है दोनों समूहों के माध्यों की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि सामान्य विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन विकलांग विद्यार्थियों की तुलना में श्रेष्ठ है क्योंकि इस समूह का माध्य विकलांग समूह की तुलना में 1.96 अंक अधिक है।

परिकल्पना परीक्षण-2 "सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' इस सम्बन्ध मे तालिका संख्या 2 प्रस्तुत की गई है-

तालिका संख्या-2

सामान्य एवं विकलांग छात्राओं का शैक्षिक समायोजन

परिगणित मूल्य	छात्रों के प्राप्तांक	
	सामान्य	विकलांग
माध्य	21.54	20.65
प्रमाप विचलन	7.91	7.93
विद्यार्थियों की संख्या	228	113
माध्य अन्तर	0.89	
माध्य का प्रमाप विभ्रम	0.91	
टी-मूल्य	0.98	
सारणी मूल्य	1.96	
सर्थकता स्तर	0.05	
शून्य परिकल्पना	स्वीकृत	

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि सामान्य छात्रों के औसत प्राप्तांक 21.54 तथा विकलांग छात्रों के औसत प्राप्तांक 20.65 है। दोनों का माध्य अन्तर 0.89 है। माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम 0.91 है परिगणित टी- अनुपात 0.98 है जो कि 0.05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 से कम है। अतः अन्तर निरर्थक है। शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में अन्तर नहीं है। दूसरे शब्दों में, सामान्य एवं विकलांग छात्राओं का शैक्षिक समायोजन एक समान है।

6. शोध अध्ययन के निष्कर्ष की व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निर्धारित परिकल्पनाओं के परीक्षण के आधार पर पाया गया है कि सामान्य एवं विकलांग छात्रों के शैक्षिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। वही सामान्य एवं विकलांग छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में अन्तर पाया गया है। अतः प्रस्तुत शोध से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यदि सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों को समायोजित करके एक साथ शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाया जाए तो वे शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक उन्नति कर सकते हैं और उनकी आकांक्षाएं भी एक दूसरे से सीख कर बढ़ सकती है तथा जो अन्तर पाया गया है उसे कम किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अरोड़ा, रीता (2005); ''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।

अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007); ''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005); ''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

दुबे, श्यामाचरण (2005); ''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ-126।

लाल एवं पलोड़ (2007); ''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0 लाल बुक डिपा।

प्रसाद, देवी (2001); ''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ-68,।

पाण्डेय, राम शुक्ल (2007); ''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ-105, 115, 116, 124।

शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005); ''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', तयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128-129।

सुखिया, एस0पी0 (2005); ''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।